



---

.. Shri NatarajhridayabhAvana Saptakam ..

॥ श्रीनटराजहृदयभावनासप्तकम् ॥

Sanskrit Document Information

---

Text title : naTarAjahRRidayabhAvanAsaptakam

File name : naTarAjahRRidayabhAvanAsaptakam.itx

Category : saptaka

Location : doc\_shiva

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : Sivakumar Thyagarajan shivakumar24 at gmail.com

Proofread by : Sivakumar Thyagarajan, PSA Easwaran

Latest update : November 6, 2016

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

November 5, 2016

*sanskritdocuments.org*

---

॥ श्रीनटराजहृदयभावनासप्तकम् ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।

कामशासनमाश्रितार्तिनिवारणैकधुरन्धरं  
पाकशासनपूर्वलेखगणैः समर्चितपादुकम् ।  
व्याघ्रपादफणीश्वरादिमुनीशसंघनिषेवितं  
चित्सभेशमहर्निशं हृदि भावयामि कृपाकरम् ॥ १ ॥

यक्षराक्षसदानवोरगकिन्नरादिभिरन्वहं  
भक्तिपूर्वकमत्युदारसुगीतवैभवशालिनम् ।  
चण्डिकामुखपद्मवारिजबान्धवं विभुमव्ययं  
चित्सभेशमहर्निशं हृदि भावयामि कृपाकरम् ॥ २ ॥

कालपाशनिपीडितं मुनिबालकं स्वपदार्चकं  
ह्यग्रगण्यमशेषभक्तजनौघकस्य सदीडितम् ।  
रक्षितुं सहसावतीर्य जघान यच्छमनं च तं  
चित्सभेशमहर्निशं हृदि भावयामि कृपाकरम् ॥ ३ ॥

भीकरोदकपूरकैर्भुवमर्णवीकरणोद्यतां  
स्वर्धुनीमभिमानीनीमतिदुश्चरेण समाधिना ।  
तोषितस्तु भगीरथेन दधार यो शिरसा च तं  
चित्सभेशमहर्निशं हृदि भावयामि कृपाकरम् ॥ ४ ॥

योगिनः सनकादयो मुनिपुंगवा विमलाशयाः  
दक्षिणाभिमुखं गुरुं समुपास्य यं शिवमादरत् ।  
सिद्धिमापुरनूपमांतमनन्यभावयुतस्त्वहं  
चित्सभेशमहर्निशं हृदि भावयामि कृपाकरम् ॥ ५ ॥


क्षीरसागरमन्थनोद्भवकालकूटमहाविषं  
निग्रहीतुमशक्यमन्यसुरासुरैरपिबोऽर्थितः ।  
रक्षति स्म जगत्त्रयं सविलासमेव निपीय तं  
चित्सभेशमहर्निशं हृदि भावयामि कृपाकरम् ॥ ६ ॥


सर्वदेवमयं यमेव भजन्ति वैदिकसत्तमाः  
ज्ञानकर्मविबोधकाः सकलागमाः श्रुतिपूर्वकाः ।

आहुरेव यमीशमादरतश्च तं सकलेश्वरं  
चित्सभेशमहर्निशं हृदि भावयामि कृपाकरम् ॥ ७ ॥  
॥ इति शिवम् ॥

Encoded by Sivakumar Thyagarajan shivakumar24 at  
gmail.com

Proofread by Sivakumar Thyagarajan, PSA Easwaran

——  
.. Shri Natarajahridayabhavana Saptakam ..  
was typeset using Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996  
on November 5, 2016

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

